



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-08
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

9. अखिल भारतीय सेवाओं और उत्तर केन्द्रीय सेवाओं में भर्ती

(क) परीक्षा का माध्यम- समिति की राय है कि

क) परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना रहे और कुछ समय पश्चात् हिन्दी वैकल्पिक माध्यम के रूप में अपना ली जाए। उसके बाद जब तक आवश्यक हो अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही परीक्षार्थी के विकल्पानुसार परीक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने की छूट हो; और

ख) किसी प्रकार की नियत कोटा प्रणाली अपनाए बिना परीक्षा के माध्यम के रूप में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग शुरू करने की व्यवहार्यता की जांच करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की जाए।

कुछ समय के पश्चात् वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग शुरू करने के लिए संघ लोक सेवा आयोग के साथ परामर्श कर गृह मंत्रालय आवश्यक कार्रवाई करे। वैकल्पिक माध्यम के रूप में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग करने से गम्भीर कठिनाइयां पैदा होने की संभावना है, इसलिए वैकल्पिक माध्यम के रूप में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग शुरू करने की व्यवहार्यता की जांच करने के लिए विशेषज्ञ समिति नियुक्त करना आवश्यक नहीं है।

(ख) भाषा विषयक प्रश्न-पत्र -

समिति की राय है कि सम्यक सूचना के बाद समान स्तर के दो अनिवार्य प्रश्न-पत्र होने चाहिए जिनमें से एक हिन्दी और दूसरा हिन्दी से भिन्न किसी भारतीय भाषा का होना चाहिए और परीक्षार्थी को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह इनमें से किसी एक को चुन ले।

अभी केवल एक ऐच्छिक हिन्दी परीक्षा पत्र शुरू किया जाए। प्रतियोगिता के फल पर चुने गए जो परीक्षार्थी इस परीक्षा पत्र में उत्तीर्ण हो गए हों, उन्हें भर्ती के बाद जो विभागीय हिन्दी परीक्षा देनी होती है उसमें बैठने और उसमें उत्तीर्ण होने की शर्त से छूट दी जाए।

10. देवनागरी अंकों के प्रयोग - जैसा कि समिति का सुझाव है केन्द्रीय मंत्रालयों का हिन्दी प्रकाशनों में अन्तर्राष्ट्रीय अंकों के अतिरिक्त देवनागरी अंकों के प्रयोग के सम्बन्ध में एक आधारभूत नीति अपनाई जाए, जिसका निर्धारण इस आधार पर किया जाए कि वे प्रकाशन किस प्रकार की जनता के लिए हैं और उसकी विषयवस्तु क्या है। वैज्ञानिक, औद्योगिक और सांख्यिकीय प्रकाशनों में जिसमें केन्द्रीय सरकार का बजट साहित्य भी शामिल है, बराबर अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग किया जाए।

11. अधिनियमों, विधेयकों इत्यादि की भाषा--

(क) समिति ने राय दी है कि संसदीय विधियां अंग्रेजी में बनती रहें किन्तु उनका प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराया जाए। संसदीय विधियां अंग्रेजी में तो रहें पर उसके प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था करने के वास्ते विधि मंत्रालय आवश्यक विधेयक उचित समय पर पेश करे। संसदीय विधियों का प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद कराने का प्रबन्ध भी विधि मंत्रालय करे।

(ख) समिति ने राय जाहिर की है जहां कहीं राज्य विधान मण्डल में पेश किए गए विधेयकों या पास किए गए अधिनियमों का मूल पाठ हिन्दी में से भिन्न किसी भाषा में है, वहां अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) के अनुसार अंग्रेजी अनुवाद के अलावा उसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया जाए।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— सुधांशु कुमार विश्वास —	3
नशा और युवा पीढ़ी —	
— पूजा धारिया	4
भगवान सब कुछ... —	
— सच्चिदानंद जिज्ञासु	6
डीमैट खाता —	
— पवन यादव	8
मिदूटी	
— मेघा कुमारी	9
भैया दूज	
— प्रियंका पाण्डेय	10
भारत के मेले	
— सुनंदा चौधरी	14
प्लेटफार्म सं....	
— विकास कुमार	15
नेताजी	
— संतोष कुमार	17
मिदूटी —	
— विनय कुमार झा	18
हिमालय -	
— पुरुषोत्तम राजमणि	18
चित्र वीथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.er.indianrailway.gov.in

चाचा नेहरू



पं. जवाहर लाल नेहरू को 'चाचा नेहरू' कहा जाता है। और उन्हें बच्चों से बहुत प्यार था। बच्चे जवाहर लाल नेहरू को चाचा इसलिए कहते थे क्योंकि बच्चों को चाचा जितना प्यारा कोई नहीं होता। दादा-दादी किस्से-कहानी तो सुना सकते हैं लेकिन आइसक्रीम खिलाने, घुमाने नहीं ले जा सकते लेकिन वे चाचा की पीठ पर चढ़ सकते हैं, खेल सकते हैं, सीख सकते हैं, चाचा शिक्षक भी है और दोस्त भी कहा जाता है कि पंडित नेहरू बच्चों से बेहद प्यार करते थे इसलिए बाल दिवस मनाने के लिए उनका जन्मदिन चुना गया।

किसी ने कहा है कि “तकदीर तो पत्थर की भी बदल सकती है, शर्त यह है कि उन्हें करीने से तराशा जाय”। बच्चों का मन भी ठीक वैसा ही होता है। बच्चों के बाल सुलभ मन पर किसी भी बात का प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक पड़ता है। बच्चों की बात हो और चाचा नेहरू का जिक्र न हो यह भला कैसे हो सकता है। हर वर्ष 14 नवम्बर को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्म के रूप में बाल दिवस मनाया जाता है।

एक बार पंडित जी तमिलनाडु के दौरे पर गए। जिस सड़क से वह गुजर रहे थे वहां के लोग साइकिलों पर खड़े होकर तो कहीं दीवारों पर चढ़कर उन्हें निहार रहे थे। प्रधानमंत्री की एक झलक पाने के लिए हर आदमी इतना उत्सुक था कि जिसे जहां समझ आया वहां खड़े होकर उन्हें निहारने लगा।

इस भीड़ भरे इलाके में नेहरू जी ने देखा कि दूर एक गुब्बारे वाला पंजों के बल खड़ा डगमगा रहा था। ऐसा लग रहा था कि उसके हाथों के तरह-तरह के रंग-बिरंगी गुब्बारे मानो पंडित जी को देखने के लिए डोल रहे हों। जैसे नेहरू जी की गाड़ी जब गुब्बारे वाले तक पहुंची तो गाड़ी से उतरकर वह गुब्बारे खरीदने के लिए आगे बढ़े तो गुब्बारे वाला हक्का-बक्का-सा रह गया। नेहरू जी ने अपने तमिल जानने वाले सचिव से कहकर सारे गुब्बारे खरीदवाए और वहां उपस्थित सारे बच्चों में वे गुब्बारे बंटवा दिए। ऐसा ही था पंडित नेहरू का बाल प्रेम।

सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया व. अनुवादक	दयामय दास, इंद्रज्योति राय

नशा और युवा पीढ़ी

देश की भावी पीढ़ी को नशे की लत पूरी तरह खोखली करती जा रही है। नशे की गिरफ्त में संभ्रांत परिवारों से लेकर निचले तबके के परिवारों के बच्चे शामिल हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन और सयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से देश में पिछले दशक में कराए गए सर्वे से भी खतरनाक होती स्थिति का पता चलता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक आठवीं कक्षा में आने से पहले दो तिहायी किशोर किसी एक नशे का कम से कम एक बार सेवन कर चुके होते हैं। प्रश्न उठता है कि आखिर क्यों ये बच्चे नशे की गिरफ्त में फंस रहे हैं? बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं बिना यह जाने कि कि उनके लिए क्या उचित है और क्या अनुचित। वह हर नई चीज को आजमाने की कोशिश करते हैं और यही प्रवृत्ति उन्हें अनजाने में नशे की ओर धकेल देती है। सूंघकर किए जाने वाले नशे की गिरफ्त में निरंतर बच्चों की संख्या बढ़ने का एक कारण यह भी है कि लंबे समय तक अभिभावकों को इसके बारे में पता ही नहीं चलता, क्योंकि इन नशों का प्रभाव तुरंत दिखाई नहीं देता। चिकित्सकों का मानना है कि लंबे समय तक इसका सेवन करने से दिमाग की कोशिकाओं के क्षतिग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है तथा कैंसर का खतरा रहता है।



किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते बच्चों के लिए परिवार की बजाय अपने दोस्तों का साथ अच्छा लगने लगता है और उनके द्वारा किए गए कार्य को वह स्वयं करने में झिझकते नहीं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण कारण, बच्चों का भावनात्मक रूप से अकेला होना है।

यदि बचपन अपराध की दुनिया में कदम रखता है तो शुरू-शुरू में गंभीर अपराध न करके वह छोटे-मोटे अपराध करता है और इससे अपने नशे के लिए पैसे एकत्र करता है। वह लोगों के मोबाइल छीनता है, जेबें काटता है। यदि इन्हें कुछ नहीं मिला तो स्ट्रीट लाइट तथा पार्कों में लगी रेलिंग आदि की चोरी भी कर लेता है। नशे की ओर बढ़ते इन बच्चों के कदमों को रोकने के लिए जरूरी है कि उन्हें स्नेह दिया जाए। यह हर अभिभावक का दायित्व बनता है कि किशोरावस्था की ओर बढ़ते अपने बच्चों के वह मित्र बनें और उनकी हर खुशी एवं परेशानी में उनके साथ रहें।

किशोर बच्चों की ये आदत युवा होते-होते खतरनाक नशीले पदार्थ के सेवन में परिवर्तित हो जाती है। इन किशोरों में करीब 12 से लेकर 18 वर्ष के बीच होते हैं। यदि बचपन में एक बार नशे की लत लग गई तो उस नशे से छुटकारा पाना अत्यन्त ही कठिन हो जाता है। कई बार अच्छे खाते-पीते घरों के बच्चे भी इस लत के शिकार हो जाते हैं और समय पर पैसे की उपलब्धता न होने की वजह से नशे की आपूर्ति के लिए वे अपराध की दुनिया में कदम रख देते हैं और सड़कों पर रहने वाले भीख मांगना शुरू कर देते हैं।

आज का लगभग हर युवा अफीम, गांजा आदि की लत का शिकार है। नशा छुड़ाने के केंद्र खुल रहे हैं पर नशे में डूबे रहने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है और नशेडियों से मुनाफा कमाने वाले बड़ी संख्या में अपना नेटवर्क फैला रहे हैं। इन धंधेबाजों में समाज के सभी वर्ग के लोग शामिल हैं। इसलिए नशे के खिलाफ मोरचा खोला भी जा रहा है तो आधे अधूरे मन से, क्योंकि सरकार, पुलिस, डाक्टर, अस्पताल हर कोई नशा पीड़ितों से लाभ उठा रहा है। नशे के व्यापार में लाभ भी है और कल तक जो किसान जमीन से कमा कर खा रहे थे अब नशे के व्यापार में लग गए हैं। गेहूं, चावल और अन्य परंपरागत फसलों के उत्पादन की बजाय अब गांजा, भाँग और अफीम की खेती में उन्हें ज्यादा मुनाफा नजर आने लगा है।

गांजा, चरस, अफीम स्मैक का कारोबार पैर पसार चुका है, जिसकी चपेट में युवा वर्ग आ रहा है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में जो माता-पिता अपने युवा हो रहे बच्चों पर ध्यान नहीं दे रहे उसके घातक परिणाम उनके सामने सकते हैं। अवैध कारोबार को फैलाने के लिए माफिया वर्ग स्कूलों और कालेजों के आसपास नशे का सामान बेचवा रहे हैं। स्कूल में पढ़ने वाले भोले-भाले युवकों को फंसाकर नशे की आदत डाल रहे हैं। एक बार जो युवा नशे की जकड़ में आ गया, फिर उसका बाहर निकलना असंभव है।

प्रतिबंधित नशे का कारोबार गली मोहल्लों में खूब फल-फूल रहा है। पुलिस को भी जानकारी है, मगर पुलिस मौन रहने में ही अपना फायदा समझती है। नशीले पदार्थ दूसरे राज्यों से लाकर माफिया शहर में खपा रहे हैं। स्कूल-कॉलेज के आसपास छोटी-छोटी दुकानों में खुलेआम नशे का सामान बिक रहा है। स्कूल ड्रेस में बच्चे उन दुकानों पर सिगरेट पीते दिखते हैं, मगर कोई कुछ नहीं कहता। सरकार मौन हो जाती है, अभिभावक ध्यान नहीं देते हैं और गैर कानूनी ढंग से बेचने वाले अपराधियों की चांदी हो जाती है।

संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं और एकल परिवार में माता-पिता के पास ज्यादा समय होता नहीं। ऐसे में अकेलेपन में बच्चे खुद को एक ऐसी दुनिया में धकेल रहे हैं जहां वह कुछ पलों के लिए ही सही, खुद को जीवन की सच्चाई से दूर कर लेते हैं। वहीं निर्धन बच्चे अपनी दो वक्त की रोटी की जुगाड़ में, संघर्ष करते-करते जीवन के सुखों को नशे में ढूंढने की कोशिश करते हैं। शोध बताते हैं कूड़ा बीनने वाले बच्चों में 75 प्रतिशत ड्रग एडिक्ट होते हैं।

नशा करने की आदत के पीछे कई तरह के कारण हैं। कहीं सामाजिक परिस्थितियां तो कहीं पारिवारिक स्थितियां और कहीं किसी किसी की मजबूरी। कुल मिलाकर नशा का प्रचलन बड़ी तेजी से बढ़ रहा है।

—पूजा धारिया

**तम्बाकू की आदत,
कैंसर को दावत**

भगवान सब कुछ देख रहा है

भगवान सब देख रहा है इस घोर कलयुग में भी भगवान इस धरा पर है और आपका हमारा तथा तुम्हारा पाप पुण्य न्याय अन्याय घृणा द्वेष ईर्ष्या डाह काम मत लो यादी को भगवान सब देख रहे हैं स्टॉप इसके बावजूद भगवान किसी को दिखाई क्यों नहीं पड़ता असल में भगवान और दृश्य सत्ता है जैसे बिजली के तार में विद्युत का प्रवाह दिखाई नहीं पड़ती जल की शीतलता सूरज की गर्मी दिखाई नहीं पड़ती इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है ठीक उसी प्रकार भगवान सर्वत्र व्याप्त है कण कण में विद्यमान है सारे ब्रह्मांड में है परंतु दिखाई नहीं पड़ता स्टॉप भगवान किसी भी रूप धारण करने में सक्षम है और वह जरूरतमंद लोगों को मदद भी करते हैं स्टॉप किसी न किसी रूप में या दूसरे के द्वारा मदद करवाते हैं दूसरे के द्वारा मदद करवाते हैं तभी तो कहा गया है कि भगवान की मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता है।

भगवान हम लोगों के आसपास है साथ-साथ है परंतु इसे इन आंखों से देखना संभव नहीं है इसे अवश्य महसूस किया जा सकता है भगवान आजकल किसी ज्ञानी वैज्ञानिक या अधिक पढ़े लिखे लोगों को महसूस नहीं होता दिखाई नहीं पड़ता कारण हुए लोग हर बात को प्रयोगशाला में सिद्ध करना चाहते हैं इसीलिए भगवान हमेशा कम पढ़े लिखे लोगों को सच्चे भक्तों को जिनको ईश्वर पर अटूट विश्वास हो उन्हें ही दिखाई देते हैं तथा उन्हें हमेशा साथ रहने का अनुभव भी होता है निस्वार्थ भाव निस्वार्थ भाव से सेवा करने वालों को भगवान का साथ होने का एहसास होता है 99 के फेरे में रहने वाले को कदापि नहीं पैरा एक गरीब ब्राह्मण रात दिन एक ही मंदिर में पूजा अर्चना तन मन धन से करता था जो मिलता था उसी से परिवार का भरण पोषण करता था तथा बहुत कठिनाई से उनकी गृहस्थी चलता था

ब्राह्मण को एक कन्या थी जो धीरे-धीरे शादी योग हो गई पत्नी रोज कन्या हेतु वर की तलाश करने के लिए झगड़ा करती लेकिन ब्राह्मण हमेशा कहते सब कृष्णा करेंगे अर्थात् मेरे भगवान करेंगे सचमुच भगवान की कृपा से बड़े घराने से संबंध आया तथा लड़की पसंद भी हो गई। अब लेन-देन की बात चली लड़के के माता-पिता द्वारा लंबी चौड़ी लिस्ट थमाई गई। भक्त पिता ने लड़की के लिए सबकुछ स्वीकार कर लिया परंतु लड़की की मां डर रही थी कहां से इतना दान-दक्षिणा पूरा करेंगे और वो बरात दरवाजे से ही मैं लौट जाए।

अतः अपने पति से इस संबंध में जब भी पूछती तो यही कहते जिसने शादी तय करवाया है वही दान दक्षिणा भी देंगे। बारात से पहले दिन ही श्रीकृष्ण सेठ का रूप धारण कर मांग की गई सारी सामग्री पहुंचा दिए थे। अतः बरात के दिन तथा शादी के समय इस संबंध में कोई बातचीत नहीं करते देख लड़की की मां को घोर आश्चर्य हो रहा था। लड़की विदा भी हुई और सुखी सुखी रहने लगी। भक्तों की लाज रखने के लिए श्रीकृष्ण ने सारी मांग पूरी कर दिए। आज भी जो लोग पर्व पर ईश्वर पर अटूट श्रद्धा रखते हैं तथा सच्चे मन से उस रामसत्ता को याद करते हैं। उनकी सारी परेशानियां दूर भगवान अवश्य करते हैं।

पूजापाठ ध्यान याद ईश्वर प्राप्ति का एक साधारण विधि मात्र है परंतु हर युग में कर्म की प्रधानता रही है। कर्म का फल मिलेगा ही इसमें ईश्वर कोई हस्तक्षेप नहीं करता जैसे आपको आम खाने की इच्छा है तो आपको आम का ही पौधा लगाना पड़ेगा कटहल का पेड़ लगाकर आप रात दिन राम राम जपते रहेंगे तो कटहल का पौधा कभी नहीं आम फलेगा ठीक उसी प्रकार प्रत्येक कर्म के साथ कर्मफल जुड़ा हुआ है।

यदि आप अपनी भलाई चाहते हैं तो आपको पहले दूसरों की भलाई करनी होगी बिना दूसरों की भलाई किए अपनी भलाई नहीं होगी आप रात दिन दूसरों की बुराई सोचते हैं तो भला आपका भला कैसे होगा यदि आप किसी को सकते हैं या धोखा देते हैं तो मन में गांठ बांध लीजिए कि उसका धन चक्रवृद्धि के हिसाब से बढ़ रहा है और उसे चुकाए बिना आप का कल्याण नहीं हो सकता यदि इस जन्म में नहीं चुकाए तो उस का कर्ज चुकाने हेतु आप को उसके घर का कुत्ता गाय नौकर बैल बनकर पूर्व जन्म का लिया या ठगी राशि वसूल कराना होगा।

अतः किसी को ठगने का प्रयास नहीं करें पूर्ण हो सके तो कर्म करें किसी असहाय की मदद करें धर्मार्थ का काम करें स्कूल कालेज अस्पताल बनाएं इससे आप ही नहीं आपके आने वाली संतति भीतर जाएगी एक अपराध पूरे वंश को बदनाम करता है।

तो एक सूत्र में भी वंश को गौरवान्वित करता है अतः शंकर भगवान अलग-अलग नहीं है यह भी मनुष्य का भ्रम है

जैसे सभी एक ही सत्ता के विभिन्न रूप हैं जैसे एक ही नदी के विभिन्न घाट होते हैं

कुछ करो सुकर्म मत पालो धर्म
कुछ करो सुकर्म मत पालो भ्रम
करनी का फल मिलना निश्चित है
लाख कर ले जतन रे भैया

मानव जीवन मिला है यह क्या कम है क्यों बर्बाद करते हो इस अमर विलक्षण जीवन खाना-पीना और मर जाना यह मानव का संस्कार नहीं जियो और हर प्राणी को जीने दो जीवन का लक्ष्य बनाओ अपने स्वार्थ की खातिर किसी जीव जंतु का मत बंद करो करनी का फल मिलेगा ही मिलेगा चाहे लाख करो जतन कुछ मत पालो कोई भ्रम कुछ करो भैया सुकर्म सच्चिदानंद जिज्ञासु



डीमैट खाता

डीमैट खाता क्या है, कैसे काम करता है, डीमैट खाते की आवश्यकता क्यों पड़ती है और इसके क्या क्या फायदे हैं विस्तार से हिंदी में जानिये। डीमैट खाता क्या है इसको आसानी से ऐसे समझिये। जैसे हम अपने पैसे अपने बैंक के खाते में रखते हैं वैसे ही हम अपने शेयर डीमैट खाते में रखते हैं। जैसे हम यदि बैंक के खाते से नकदी निकलवा लें तो वह नकदी या करंसी पैसे का भौतिक रूप है। मगर जब हम अपने डेबिट कार्ड से किसी दूकानदार को पेमेंट करते हैं तो यह पैसे का इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसफर हुआ। इसी प्रकार यदि हमारे पास शेयर हैं तो हम या तो उन्हें किसी को गिफ्ट देंगे या बाजार में बेच देंगे, दोनों ही परिस्थितियों में शेयरों का एक डीमैट खाते से दूसरे डीमैट खाते में इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसफर किया जाएगा। शेयरों को भौतिक रूप में रखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

शेयरों को इलेक्ट्रॉनिक्स रूप से खाते में रखने की सुविधा को डीमैट कहते हैं। भारत में शेयर और प्रतिभूतियां को इलेक्ट्रॉनिक रूप से **Dematerialized** डिमैटीरिलाइज्ड यानी डीमैट खातों में रखा जाता है। शेयर धारक शेयरों को भौतिक रूप में यानी कागज पर छपे हुए शेयर सर्टिफिकेट नहीं रखते। इसके लिए ब्रोकर के पास जा कर डीमैट खाता खुलवाया जाता है। सभी शेयरों के लेनदेन में डीमैट खाते का नंबर लिखा जाता है जिससे कि शेयरों की खरीद बिक्री का इलेक्ट्रॉनिक सेटलमेंट हो सके। किसी भी तरह के शेयरों के लेनदेन के लिए शेयर होल्डर के पास डीमैट खाता होना आवश्यक है। आपको डीमैट खाता खुलवाने के लिए किसी रजिस्टर्ड ब्रोकर (इन्हें डिपॉजिटरी पार्टिसिपेंट यानी डीपी कहते हैं) से संपर्क करना होगा। ये ब्रोकर फर्म दो डिपॉजिटरी में से किसी एक या दोनों से जुड़ी होती हैं। इनके नाम हैं- नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) और सेंट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज लिमिटेड (सीडीएसएल)। डीमैट खाते का संचालन यही दोनों करती हैं।

अगर आपके पास यह खाता नहीं है तो आप शेयर बाजार में कारोबार नहीं कर सकते। इससे सिक्योरिटीज यानी शेयर, डिबेंचर, म्यूचुअल फंड यूनिट वगैरह को रखना आसान और सहज हो जाता है। डीमैट खाता होने से न तो शेयरों व फंड यूनिटों के चोरी हो जाने का डर रहता है और न ही इनके प्रमाण पत्रों के फटने या खराब होने का। ईमेल के जरिये अपने शेयरों की स्थिति की जानकारी मिलती रहती है।

डीमैट खाता आपके बैंक अकाउंट से जुड़ा होता है। इस खाते के कारण शेयरों का ट्रांसफर और नॉमिनेशन का काम आसान हो जाता है। अगर आवास का पता बदला है तो डीपी को सूचित कर देने भर से सभी कंपनियों तक यह सूचना स्वतः भेज दी जाती है। खाते को खोलने का खर्च 300 रुपये तक आता है। इसको बनाए रखने के लिए सालाना फीस भी देनी होती है।

डीमैट खाते तक पहुँचने के लिए इंटरनेट पर पासवर्ड की जरूरत होती है। शेयरों की खरीद और बिक्री सौदा कन्फर्म होने पर स्वतः ही हो जाती है।

जब भी कोई कंपनी बोनस अथवा राईट शेयर जाती कराती है तो ये शेयर भी सीधे शेयर होल्डर के डीमैट खाते में आ जाते हैं। आईपीओ **IPO** में शेयरों के आवेदन करने के लिए भी डीमैट खाते की आवश्यकता है। यदि आईपीओ में आपको शेयर मिले हैं तो वे सीधे आपके डीमैट खाते में ही आ जाते हैं।

डीमैट शेयर गुम नहीं होते, खराब नहीं हो सकते, चोरी नहीं हो सकते। इनसे सिग्नेचर ना मिलने जैसी समस्या भी नहीं होती। डीमैट खातों की वजह से शेयरों की खरीद बिक्री में धोखा होने की संभावना भी समाप्त हो जाती है। यह बहुत ही सुविधाजनक भी है।

— पवन यादव

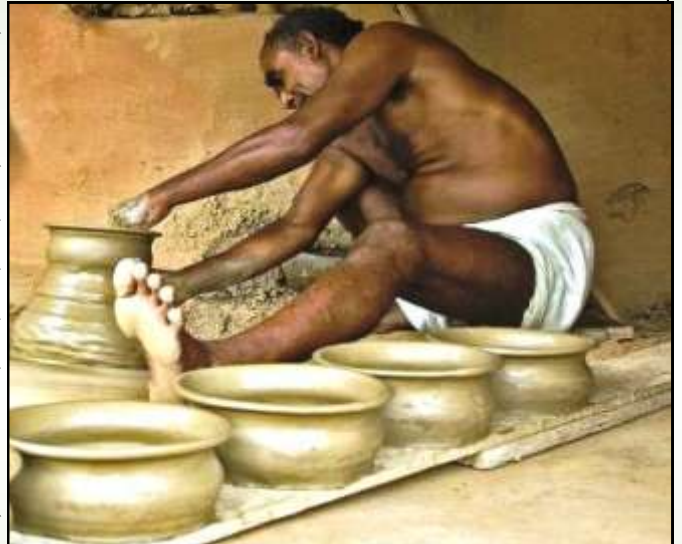
मिट्टी

बार-बार पैरों तले कुचले जाने के कारण मिट्टी अपने भाग्य पर रो पड़ी। अहो! मैं कैसी बदनसीबी हूँ कि सभी लोग मेरा अपमान करते हैं। कोई भी मुझे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता जबकि मेरे ही भीतर से प्रस्फुटित होने वाले फूल का कितना सम्मान है। फूलों की माना पिरोकर गले में पहनी जाती है। भक्त लोग अपने उपास्य के चरणों में चढ़ाते हैं। वनिताएं अपने बालों में गूँथ कर गर्व का अनुभव करती हैं। क्या ही अच्छा हो कि मैं भी लोगों के मस्तिष्क पर चढ़ जाऊँ!

मिट्टी के अंदर से निकलती हुई आह को जानकर कुंभकार बोला- मिट्टी बहिन! तुम यदि सम्मान पाना चाहती हो तो तुम्हें बड़ा सम्मान दिला सकता हूँ लेकिन एक शर्त है।

'एक क्या तुम्हारी जितनी भी शर्तें हों, मुझे सभी स्वीकार हैं। बस मुझे लोगों के पैरों तले से हटा दो,' कुंभकार की बात को बीच में ही काटते हुए मिट्टी ने कहा।

'तो फिर ठीक है, तैयार हो जाओ' -कहते हुए कुंभकार ने जमीन खोदकर मिट्टी बाहर निकाली। गधों की सवारी कराता हुआ उसे घर ले आया। पानी में डालकर उसे बहुत समय तक गीली रखा। इतना ही नहीं फिर पैरों से उसे खूब रौंदा। कष्टों को सहते हुए मिट्टी बोली, 'अरे भाई! बहुत कष्ट दे रहे हो। कब मुझे सम्मान का पात्र बनाओगे?'



'मिट्टी बहिन! धैर्य रखो। अभी सहती जाओ, तुम्हें इसका मधुर फल जरूर मिलेगा।'

कुंभकार की बात सुनकर मिट्टी कुछ नहीं बोली।

कुंभकार ने मिट्टी को चाक पर चढ़ाया और उसे तेजी से घुमाते हुए घड़े का रूप दिया। फिर धूप में सुखाया। कष्ट सहते-सहते जब मिट्टी का धैर्य टूटने लगा तो कुंभकार बोला, 'बस बहन! अब केवल एक अग्नि-परीक्षा ही शेष है। और सभी में तुम उत्तीर्ण हो चुकी हो। यदि उसमें भी उत्तीर्ण रही तो लोग सती सीता की तरह तुम्हें भी मस्तक पर चढ़ा लेंगे। सीता को लोग सिर झुकाकर सम्मान देते हैं किन्तु तुम्हें तो वनिताएं सिर पर सजा कर घूमेंगी।'

आखिर मिट्टी ने सब कुछ सह कर अग्नि-परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। फिर क्या था! सचमुच सुंदरियां उसे सिर पर उठाए फिरने लगीं। मिट्टी अपने सम्मान पर प्रफुल्लित हो उठी। आखिर सम्मान पाने के लिए कष्ट तो सहने ही पड़ते हैं। यह बात आदमी और मिट्टी दोनों के साथ फलित होती है।

— मेघा कुमारी

भैया दूज

भैया दूज का त्योहार भाई बहन के स्नेह को सुदृढ़ करता है। यह त्योहार दीवाली के दो दिन बाद मनाया जाता है।

हिन्दू धर्म में भाई-बहन के स्नेह-प्रतीक दो त्योहार मनाये जाते हैं - एक रक्षाबंधन जो श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसमें भाई बहन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करता है। दूसरा त्योहार, 'भाई दूज' का होता है। इसमें बहनें भाई की लम्बी आयु की प्रार्थना करती हैं। भाई दूज का त्योहार कार्तिक मास की द्वितीया को मनाया जाता है।

भैया दूज को भ्रातृ द्वितीया भी कहते हैं। इस पर्व का प्रमुख लक्ष्य भाई तथा बहन के पावन संबंध व प्रेमभाव की स्थापना करना है। इस दिन बहनें बेरी पूजन भी करती हैं। इस दिन बहनें भाइयों के स्वस्थ तथा दीर्घायु होने की मंगल कामना करके तिलक लगाती हैं। इस दिन बहनें भाइयों को तेल मलकर गंगा यमुना में स्नान भी कराती हैं। यदि गंगा यमुना में नहीं नहाया जा सके तो भाई को बहन के घर नहाना चाहिए।

यदि बहन अपने हाथ से भाई को जीमाए तो भाई की उम्र बढ़ती है और जीवन के कष्ट दूर होते हैं। इस दिन चाहिए कि बहनें भाइयों को चावल खिलाएं। इस दिन बहन के घर भोजन करने का विशेष महत्व है। बहन चचेरी अथवा ममेरी कोई भी हो सकती है। यदि कोई बहन न हो तो गाय, नदी आदि स्त्रीत्व पदार्थ का ध्यान करके अथवा उसके समीप बैठ कर भोजन कर लेना भी शुभ माना जाता है।

इस दिन गोधन कूटने की प्रथा भी है। गोबर की मानव मूर्ति बना कर छाती पर ईंट रखकर स्त्रियां उसे मूसलों से तोड़ती हैं। स्त्रियां घर-घर जाकर चना, गूँ तथा भटकैया चराव कर जिह्वा को भटकैया के कांटे से दागती भी हैं। दोपहर पर्यन्त यह सब करके बहन भाई पूजा विधान से इस पर्व को प्रसन्नता से मनाते हैं। इस दिन यमराज तथा यमुना जी के पूजन का विशेष महत्व है।

भगवान सूर्य नारायण की पत्नी का नाम छाया था। उनकी कोख से यमराज तथा यमुना का जन्म हुआ था। यमुना यमराज से बड़ा स्नेह करती थी। वह उससे बराबर निवेदन करती कि इष्ट मित्रों सहित उसके घर आकर भोजन करो। अपने कार्य में व्यस्त यमराज बात को टालता रहा। कार्तिक शुक्ला का दिन आया। यमुना ने उस दिन फिर यमराज को भोजन के लिए निमंत्रण देकर, उसे अपने घर आने के लिए वचनबद्ध कर लिया।

यमराज ने सोचा कि मैं तो प्राणों को हरने वाला हूँ। मुझे कोई भी अपने घर नहीं बुलाना चाहता। बहन जिस सद्भावना से मुझे बुला रही है, उसका पालन करना मेरा धर्म है। बहन के घर आते समय यमराज ने नरक निवास करने वाले जीवों को मुक्त कर दिया। यमराज को अपने घर आया देखकर यमुना की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने स्नान कर पूजन करके व्यंजन परोसकर भोजन कराया। यमुना द्वारा किए गए आतिथ्य से यमराज ने प्रसन्न होकर बहन को वर मांगने का आदेश दिया। यमुना ने कहा कि भद्र! आप प्रति वर्ष इसी दिन मेरे घर आया करो। मेरी तरह जो बहन इस दिन अपने भाई को आदर सत्कार करके टीका करे, उसे तुम्हारा भय न रहे। यमराज ने तथास्तु कहकर यमुना को अमूल्य वस्त्राभूषण देकर यमलोक की राह की। इसी दिन से पर्व की परम्परा बनी। ऐसी मान्यता है कि जो आतिथ्य स्वीकार करते हैं, उन्हें यम का भय नहीं रहता। इसीलिए भैयादूज को यमराज तथा यमुना का पूजन किया जाता है।

— प्रियंका पाण्डेय

भारत के मेले

सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला, भारत की एवं शिल्पियों की हस्तकला का 15 दिन चलने वाला मेला लोगों को ग्रामीण माहौल और ग्रामीण संस्कृति का परिचय देता है। यह मेला हरियाणा राज्य के फरीदाबादशहर के दिल्ली के निकटवर्ती सीमा से लगे सूरजकुंड क्षेत्र में प्रतिवर्ष लगता है। यह मेला लगभग ढाई दशक से आयोजित होता आ रहा है। वर्तमान में इस मेले में हस्तशिल्पी और हथकरघा कारीगरों के अलावा विविध अंचलों की वस्त्र परंपरा, लोक कला, लोक व्यंजनों के अतिरिक्त लोक संगीत और लोक नृत्यों का भी संगम होता है ।

इस मेले में हर वर्ष किसी एक राज्य को थीम बना कर उसकी कला, संस्कृति, सामाजिक परिवेश और परंपराओं को प्रदर्शित किया जाता है। वर्ष 2010 में राजस्थान थीम राज्य है। इसे दूसरी बार यह गौरव प्राप्त हुआ है। मेले में लगे स्टॉल हर क्षेत्र की कला से परिचित कराते हैं। सार्क देशों एवं थाईलैंड, तजाकिस्तान और मिस्र के कलाशिल्पी भी यहां आते हैं

यहां अनेक राज्यों के खास व्यंजनों के साथ ही विदेशी खानपान का स्वाद भी मिलता है। मेला परिसर में चौपाल और नाट्यशाला नामक खुले मंच पर सारे दिन विभिन्न राज्यों के लोक कलाकार अपनी अनूठी प्रस्तुतियों से समा बांधते हैं। शाम के समय विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। दर्शक भगोरिया डांस, बीन डांस, बिहू, भांगड़ा, चरकुला डांस, कालबेलिया नृत्य, पंथी नृत्य, संबलपुरी नृत्य और सिद्धी गोमा नृत्य आदि का आनंद लेते हैं। विदेशों की सांस्कृतिक मंडलियां भी प्रस्तुति देती हैं ।

पुष्कर मेला

अजमेर से 11 कि॰मी॰ दूर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर है। यहां पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। हजारों हिन्दु लोग इस मेले में आते हैं। व अपने को पवित्र करने के लिए पुष्कर झील में स्नान करते हैं। भक्तगण एवं पर्यटक श्री रंग जी एवं अन्य मंदिरों के दर्शन कर आत्मिक लाभ प्राप्त करते हैं।

राज्य प्रशासन भी इस मेले को विशेष महत्व देता है। स्थानीय प्रशासन इस मेले की व्यवस्था करता है एवं कला संस्कृति तथा पर्यटन विभाग इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

इस समय यहां पर पशु मेला भी आयोजित किया जाता है, जिसमें पशुओं से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम भी किए जाते हैं, जिसमें श्रेष्ठ नस्ल के पशुओं को पुरस्कृत किया जाता है। इस पशु मेले का मुख्य आकर्षण होता है।



भारत में किसी पौराणिक स्थल पर आम तौर पर जिस संख्या में पर्यटक आते हैं, पुष्कर में आने वाले पर्यटकों की संख्या उससे कहीं ज्यादा है। इनमें बड़ी संख्या विदेशी सैलानियों की है, जिन्हें पुष्कर खास तौर पर पसंद है। हर साल कार्तिक महीने में लगने वाले पुष्कर ऊंट मेले ने तो इस जगह को दुनिया भर में अलग ही पहचान दे दी है।

मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन सा देखने को मिलता है। एक तरफ तो मेला देखने के लिए विदेशी सैलानी पड़ी संख्या में पहुंचते हैं, तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के तमाम इलाकों से आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने-अपने पशुओं के साथ मेले में शरीक होने आते हैं।

मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है। ढेर सारी कतार की कतार दुकानें, खाने-पीने के स्टाल, सर्कस, झूले और न जाने क्या-क्या। ऊंट मेला और रेगिस्तान की नजदीकी है इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। लेकिन कालांतर में इसका स्वरूप विशाल पशु मेले का हो गया है।

कुंभ मेला

हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुंभ पर्व स्थल हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष इस पर्व का आयोजन होता है। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुंभ भी होता है। 2013 का कुम्भ प्रयाग में हुआ था। खगोल गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारम्भ होता है, जब सूर्य और चन्द्रमा, वृश्चिक राशी में और वृहस्पति, मेष राशी में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति के होने वाले इस योग को "कुम्भ स्नान-योग" कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलिक माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार इस दिन खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है।

कुंभ पर्व के आयोजन को लेकर दो-तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इंद्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हें सारा वृत्तान्त सुनाया। तब भगवान विष्णु ने उन्हें दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मंथन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर संपूर्ण देवता दैत्यों के साथ संधि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुंभ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इंद्र पुत्र जयंत अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। उसके बाद दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत को वापस लेने के लिए जयंत का पीछा किया और घोर परिश्रम के बाद उन्होंने बीच रास्ते में ही जयंत को पकड़ा। तत्पश्चात् अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा।

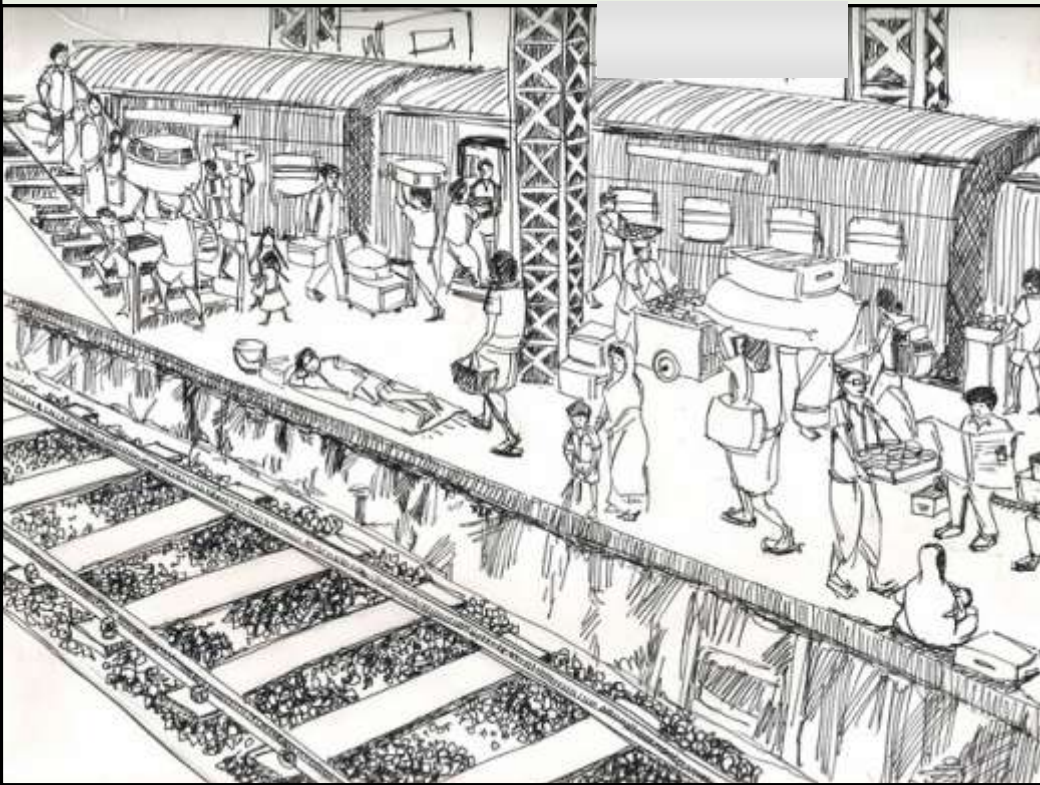
इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। उस समय चंद्रमा ने घट से प्रसवण होने से, सूर्य ने घट फूटने से, गुरु ने दैत्यों के अपहरण से एवं शनि ने देवेन्द्र के भय से घट की रक्षा की। कलह शांत करने के लिए भगवान ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार सबको अमृत बाँटकर पिला दिया। इस प्रकार देव-दानव युद्ध का अंत किया गया।

—सुनंदा चौधरी

प्लेटफार्म संख्या — आठ

हावड़ा का आठ नंबर प्लेटफार्म, जहां यात्रियों की भीड़ धीरे-धीरे जमा हो रही है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार को जाने वाली हावड़ा-काठगोदाम एक्सप्रेस यहीं से खुलती है। उस लाइन से लखनऊ की ओर जाने वाली यह एक मात्र गाड़ी है।

प्लेटफार्म पर भीड़ उन लोगों की सबसे अधिक है जो फैक्टरियों और कारखानों आदि में मजदूरी करके अपनी जीविका चलाते हैं। देखने से ये अर्द्धशिक्षित या अशिक्षित जान पड़ते हैं लेकिन इनके पास सामान भी कम नहीं हैं।



शायद ये बहुत दिनों के बाद कलकत्ते से घर लौट रहे हैं।

रेलवे का आरक्षण कैसे होता है, यह या तो इन्हें पता नहीं है या फिर मिलेगा ही नहीं सोचकर, कराए ही नहीं हैं। वैसे लोगों को जिन्हें आरक्षण नहीं मिला है, साधारण डिब्बे में जाना होगा इसलिए साधारण डिब्बे में चढ़ने के लिए काफी

रस्साकसी है।

गाड़ी छूटने में अभी एक घंटा देर है पर स्टेशन का वह प्लेटफार्म खचाखच भर गया है। गाड़ी अभी प्लेटफार्म पर आई भी नहीं है पर जाने वाले यात्री बार-बार कुलियों से यह पूछ कर अपने को आश्वस्त कर रहे हैं कि गाड़ी इसी प्लेटफार्म पर तो आएगी? इस प्लेटफार्म पर जो विशेषता नजर आती है वह यह कि जितने लोगों को यात्रा करनी है उससे अधिक उनको विदा करने परिजन आए हुए हैं।

जाने वालों के मन में खुशी है, अपने परिवार वालों से मिलने की तो पहुंचने आए परिजनों को अपने-अपने प्रियजनों तक संवाद पहुंचाए जाने का भरोसा है।

कुछ देर बाद प्लेटफार्म पर दो-चार रेल पुलिस के जवान हाथों में डंडा लिए हुए आ गए और उनमें से एक ने भीड़ को संबोधित करते हुए आदेशात्मक स्वर में कहा- “सभी लाइन में खड़े हो जाओ।”

इस आदेश के पालन में कुछ देर हुई। तड़तड़ दो-चार डंडे लोगों पर पड़े। फिर लोगों का गुटमुटाया झुंड बिखर कर स्वतः एक के पीछे एक खड़ा होने लगा। देखते ही देखते कई जगह लंबी-लंबी लाइनें लग गईं।

सीटी देती हुई गाड़ी रेंगती-रेंगती स्टेशन पर आ रही थी। खड़ी होने के पूर्व ही लोगों का उतावलापन बढ़ गया। हर आदमी जल्दी से जल्दी गाड़ी में चढ़ जाना चाहता था। इसी आपाधापी में एक जोरदार धक्का-मुक्की हुई। दबाव इतना तेज था कि सबसे आगे खड़ा व्यक्ति अपने को बड़ी मुश्किल से रोक पाया, नहीं तो गाड़ी की दीवार से टकरा कर उसका सिर फूट जाता।

अस्त-व्यस्तता देख कर पुलिस वाले अपने डंडे लेकर लाइन में खड़े लोगों पर आंधी की तरह बरसने लगे* लोग डर के मारे पुनः अपनी-अपनी जगह पर ऐसे स्थिर हो गए मानो उनके भीतर कोई हलचल ही न हुई हो।

भीड़ में पीछे एक बूढ़ा व्यक्ति सिर पर एक बोरा लिए हुए खड़ा था। उसकी उम्र कुछ ज्यादा ही लग रही थी और शायद उसे पहुंचाने भी कोई नहीं आया था। वह गुमसुम और चिंतित दिखाई पड़ रहा था। तभी एक गाड़ी कर्मचारी हाथों में चाबियों का बड़ा गुच्छा लिए आया और फटाफट डिब्बों के दरवाजों का ताला खोलना शुरू किया।

ताला अभी खुला नहीं था कि भीड़ एक बार फिर अनियंत्रित हो उठी। उसी दौरान फिर इतनी जोर की धक्का-मुक्की हुई कि लोगों को अपने को संभालना कठिन हो गया। बूढ़े के पीछे एक हट्टा-कट्टा आदमी खड़ा था। बड़ी उतावली थी उसे गाड़ी में चढ़ने की। उसने इतना जोर का दबाव उत्पन्न किया कि बूढ़े के लिए बर्दाश्त कर पाना मुश्किल हो गया और वह प्लेटफार्म पर धड़ाम से चित गिर पड़ा।

चोट उसके सिर में लगी। कहीं से खून रिसने लगा। लेकिन उसको क्या पता, वह तो बेहोश हो गया था। सबको अपनी-अपनी गाड़ी पकड़नी थी, उसे कौन देखने की जरूरत महसूस करता। सब रेलमपेल किए गाड़ी के डिब्बे में घुस पड़ने को बेताब थे।

उसी लाइन में कुछ पीछे देखने में मध्यम कद का एक नौजवान भी खड़ा था जो लाइन के बढ़ने के साथ-साथ धीरे-धीरे डिब्बे की ओर बढ़ रहा था। वह उस बूढ़े तक पहुंचकर रुक गया। जमीन पर फैल रहे खून को देख कर एक बार सहमा, फिर भीड़ के साथ आगे बढ़ जाने को तत्पर हो उठा, किन्तु उसकी आत्मा ने गवाही नहीं दी। वह लाइन से छिटक कर अलग हो गया।

कंधे पर अपना बैग लटकाए वह उस बूढ़े के निकट गया और बोला- “बाबा ! क्या हुआ तुम्हें?”

किन्तु कोई जवाब न पा कर उसने झुक कर उसके माथे से बहते खून की जगह पर हाथ रखा। कैसी है यह दुनिया ! और न जाने क्या-क्या बड़बड़ाता हुआ सोच रहा था। अब तक धीरे-धीरे आसपास के लोग उसके निकट आकर इकट्ठे होने लगे थे। जितने भी लोग आते उससे कोई न कोई प्रश्न अवश्य करते।

जितने मुंह उतनी बातें। युवक किस-किस के प्रश्न का उत्तर देता। वह भला बताता भी तो क्या? वह भी तो उतना ही अनजान था जितना पूछने वाले। भीड़ में से एक आदमी ने अपनी बोतल निकाली और उस बूढ़े के मुंह

पर पानी के छींटे मारना शुरू किया।

भीड़ को चीरते हुए दो पुलिस के जवान भी आ गए। उन्होंने भी कुछ प्रश्न किए, किंतु उस युवक से सही उत्तर न पाकर उसे रोक लिया और बूढ़े के होश में आने की प्रतीक्षा करने लगे। उसे जल्दी होश में न आता देख एक ठेला गाड़ी को पकड़ कर उस पर बूढ़े को उन्होंने लदवा दिया।

युवक अब वहां से गाड़ी की ओर बढ़ने को हुआ। लेकिन पुलिस वालों ने उसे स्टेशन की पुलिस चौकी तक चलने को कहा। युवक ने बताया कि वह तो उस बूढ़े की मानवता के नाते सेवा-सुश्रुषा कर रहा था। लेकिन पुलिस वाले मानने को तैयार नहीं थे। युवक की विनती का भी कोई असर पुलिस वालों पर नहीं हो रहा था बल्कि कई बार उसके कहने से वे नाराज हो उठे थे। युवक ने जब पुलिस वालों के कठोर रुख को देखा तो नर्म पड़ते हुए अनुरोध करने लगा- “साहब ! यह बूढ़ा गिर कर बेहोश हो गया था तो मैं इस पर तरस खा कर इसे होश में लाने की चेष्टा कर रहा था। देखिए, मुझे अपने घर गोरखपुर जाना अति आवश्यक है। मेरी मां की तबीयत बहुत खराब है। घर से तार आया है, अतः मुझे गाड़ी पकड़ लेने दीजिए अन्यथा मैं कल घर न पहुंच सट्टलूंगा।”

आदेश का पालन न होते देख एक पुलिस वाले ने उसका कालर पकड़ते हुए कहा- “चलता है कि दो-चार हाथ दूं। तुम लोग भोले-भाले लोगों को लूटते हो। साले, बात बनाते हो, चलते हो कि नहीं।”

पुलिस चौकी में डॉक्टर ने तुरंत ही बूढ़े को आवश्यक दवाइयां दीं और कुछ क्षण के पश्चात् उसे होश आ गया। गाड़ी के प्लेटफार्म छोड़ने में सिर्फ दस मिनट ही शेष रह गए थे। उस युवक को भारी चिंता हो रही थी कि कहीं गाड़ी न छूट जाए और वह बेचैनी से पुलिस वालों से अपने छूटने की प्रतीक्षा कर रहा था।

“तुम्हें चोट कैसे लगी ?” पुलिस के बड़ा बाबू ने पूछा।

“सरकार, मेरे पीछे एक युवक खड़ा था जिसने बड़े जोर से धक्का मारा। मैं जमीन पर गिर पड़ा।” वह बूढ़ा बोल ही रहा था कि उसे याद आया कि उसका बोरा कहां है? उसने इधर-उधर देख कर पूछा- “मालिक ! मेरा बोरा दिखाई नहीं पड़ रहा है।”

एक पुलिस वाले ने पूछा- “तुम्हारा बोरा भी था? वह तो नहीं आया है।”

बूढ़ा दहाड़ मार कर चिल्ला उठा- “हाय ! मैं तो लुट गया ! मैं बर्बाद हो गया ! मेरी तीन बरस की सारी कमाई लुट गई। मैं लुट गया...।!”

पुलिस का एक जवान दौड़ते हुए प्लेटफार्म पर गया मगर उसके गिरने की जगह पर कोई बोरा-वोरा उसे नहीं मिला।

पुलिस वालों ने उसके सामने उस युवक को पेश करते हुए पूछा- “क्या यह वही लड़का है जिसने तुम्हें धक्का दिया था?”

बोरे के खो जाने की चिंता में वह अर्द्धविक्षिप्त-सा हो गया था और उसी अर्द्धविक्षिप्तता की स्थिति में बोल गया- “हां ! यही था वह लड़का, मारो ! मारो ! इसको, इसी ने मुझको लूटा है।”

उस युवक को काटो तो खून नहीं। वह एकदम घबड़ा गया। बड़ा मुश्किल है अब बचना, लगता है यह बूढ़ा पगला गया है। गाड़ी तो मिलेगी ही नहीं, उल्टे सजा भी भोगनी पड़ेगी। एक बार सिहर उठा वह पुलिस की कड़कती

आवाज सुन कर- “साले, गिरोह बना कर तू भोले-भाले लोगों को लूटता रहता है। जल्दी बताओ कि इसका बोरा कहां छुपाया है ? वरना इतनी मार पड़ेगी कि तेरा बाप भी सच-सच बता देगा।”

उसकी रही-सही हिम्मत भी टूट गई। उसने लगभग रुआंसे स्वर में पुलिस वालों से प्रार्थना की- “साहब ! मैं इस पर तरस खा कर इसकी मदद करने गया था। मैं तो लाइन में पीछे खड़ा था।”

लेकिन उसकी बात सुनने को कोई तैयार नहीं था। इधर घायल बूढ़े ने रो-रो कर कहना शुरू किया कि कैसे उसके सारे अरमानों पर पानी फिर गया है। कितनी परेशानियों और कष्टों को सहा था, उसने अपनी तीन बरस की कठोर कमाई को संजोने पर। कैसे छुड़ाएगा वह अपना पुस्तैनी घर? अगर इस बार वह अपना घर न छुड़ा सका तो गांव जा कर कहां रहेगा?

क्या बीतेगी उसकी बुढ़िया पत्नी पर? वह तो इस हादसे से मर ही जाएगी। फिर मेरा क्या होगा? कौन पूछेगा मुझे? क्या समाज मुझे जिंदा रहने देगा? अगर समाज रक्षक ही होता तो क्या आवश्यकता थी कलकत्ता तक आने की? अब मैं किस मुंह से घर जाऊं ? हाय रे विधाता...। क्या किया तूने ! सोचते-सोचते बूढ़ा एक बार फिर अचेत हो गया।

उस युवक से न तो बोलते बन रहा था न चुप ही रहते। वह विवश था ईश्वर को याद करने के लिए। गाड़ी के छूटने में सिर्फ चंद मिनट ही शेष रह गए थे। उसे अपनी बीमार मां की बार-बार याद आ रही थी। उसके मन में न जाने क्या-क्या विचार आते और लौट जाते। अगर मैं न पहुंचा तो मां को शायद ही देख पाऊं। गाड़ी छूट जाने से वह अब तो दूसरे दिन भी नहीं पहुंच पाएगा।

तभी एक जोरदार तमाचा युवक के गाल पर लगा और वह तिलमिला गया। अब सीधे उसे हवालात ही दिखाई दे रहा था। भय और लोक-लज्जा के ख्याल से वह विचलित हो उठा। तभी बूढ़े को होश आ गया और वह निर्विकार भाव से युवक को देखने लगा।

गाड़ी प्लेटफार्म से धीरे-धीरे सरकने लगी थी। युवक ने घड़ी पर ध्यान दिया। एक बार ईश्वर को ध्यान करके साहस के साथ पूछा- “बाबा ! मैं तो नहीं था न जिसने तुम्हें धक्का दिया। कह दो न ! कह दो न बाबा, इन पुलिस वालों से, मैं नहीं था...।”

वह बूढ़ा गौर से उसके चेहरे को देखने लगा। उसे याद आया कि उसके पीछे जो आदमी खड़ा था, वह उससे जब बातचीत कर रहा था तो उसके चेहरे पर मूंछें नहीं थी, पर यह क्या इसकी तो मूंछें हैं। न, न यह नहीं हो सकता। कैसा अपराध हो गया। एक निरपराध पकड़ा गया। वह घबड़ाते हुए बोला- “साहब इसे छोड़ दीजिए, यह वह आदमी नहीं है।”

“क्या?” ठीक से देख कर बोलो।

“ठीक ही तो बोल रहा हूं। छोड़ दीजिए इसे।”

पुलिस मजबूर थी उसे छोड़ने को। युवक चौकी से बाहर आया और कुछ ही क्षण पूर्व प्लेटफार्म छोड़ चुकी गाड़ी को जाते हुए भीगें नेत्रों से अपलक देखने लगा।

— विकास कुमार

नेता जी

नेता जी रामपाल साहब को बात—बात पर गुस्सा आ रहा था। कभी बीवी पर गुस्सा उतारते तो कभी सेक्रेटरी को हड़काते तो कभी संतरी से उलझ जाते। बाद में सॉरी कहकर सारी बातों का निपटारा करते। नेताजी को आश्चर्य हो रहा था कि बात-बात पर उन्हें गुस्सा का क्यों आ रहा है। उन्होंने पत्नि से अपनी समस्या कह सुनाई। पत्नी से समझाया कि देखिए आपका गुस्सा न तो कोई राष्ट्रीय समस्या है और न नहीं अंतराष्ट्रीय समस्या है जिसपर टीवी वाले चर्चा करेंगे और आपको लोकप्रियता मिलेगी। और न ही आपके गुस्से से आपको कोई चुनाव लाभ मिलने जा रहा है। इसलिए मेरा तो मानना है कि आपको डॉक्टर की आवश्यकता है।



धर्मपत्नी की बात सुनकर वो सोचने लगे। पत्नी ने उन्हें हिदायत देते हुए कहा कि नेता जी आप थोड़ा समझदारी से काम लो नहीं तो अपने गुस्से के चलते मेरे हाथों से किसी दिन पिटोगे। अगर आप बाहर पिते तो मुझे मोर्चा संभालना पड़ेगा क्योंकि ऐसा नहीं करने मेरी इज्जत मिटटी में मिल जाएगी। पत्नी ने कहना जारी रखा कि- देखो मुझे इन दिनों बुझा रहा है कि इन दिनों तुम नेता बनने के गुण खोते जा रहे हो। कारण कि तुम दबाव एकदम नहीं सहन कर पा रहे हो। जब तुमसे थोड़ा सा दबाव सहन नहीं होता तो घोटाले का दबाव कैसे सह पाओगे।

जेल यात्रा का दबाव कैसे सह पाओगे। पत्नी के उपदेश का उनपर असर दिखा और वे डॉक्टर के पास जाने के लिए तैयार हो गए। डाक्टर ने उन्हें गौर से देखा और कहा कि आपके चेहरे पर दबाव की स्पष्ट रेखा दिखाई देती है कहीं आप नैतिकता पालन का प्रयास तो नहीं कर रहे हैं। फिर डॉक्टर ने उनकी धर्मपत्नी से कहा कि आपके पति स्वच्छन्दता में जीने के आदि रहे हैं। और लगता है कि चुनाव आयोग के कड़ाई से वे अति दबाव में आ गये हैं। लगता है कि आप किसी महान विचारक से भी कुछ प्रभावित हुए हैं।

चुनाव प्रचार के दौरान भी आपको संयम बरतना पड़ रहा होगा। शराब की पेटियां जब्त हो जाने के कारण मौज-मस्ती की भी संभावनाएं कम हो गई होगी। यही दमित इच्छा उनका हाजमा बिगाड़ रही है। डॉक्टर ने उनकी पत्नी

की ओर मुखातिब होते हुए कहा कि चिंता करने की बात नहीं है। वे अपना भड़ास निकालने में कंजूसी न करें। ज्यादा गुस्सा आ रहा हो तो कुर्सी का फेंका- फेंकी कर लें। संसद न चल रहा हो यह क्रिया बाहर भी किसी के साथ किया जा सकता है।

लोकपाल के एक प्रति हरदम हाथ में लिए रहें। और गुस्सा आए तो उसे फाड़ दिया करें। अगर इतने से भी बात न बने तो किसी भी बात के गड़े मुर्दे को उखाड़ कर उसे मुद्दा बनाकर सड़क पर उतर जाय। टीवी चैनलों पर जाकर अपनी भड़ास निकालें। विपक्षी दल को जी भर कर कोसे। और इस तरह से आप देखेंगे कि धीरे धीरे आप की समस्या का समाधान हो जाएगा।

— संतोष कुमार

मिट्टी

मिट्टी है तो हमारा कल है
जीवन के लिए अनमोल है
इसे बर्बाद मत कीजिये
इसी से जल जंगल है।

धरा तरसती पानी को यहां
पानी ही तो धन दौलत है
जल सा धन और कहां
मिट्टी है तो हमारा कल है

नष्ट न होने पाये यह जोत
इसी में है मानव का सुख निहित
मिट्टी उगलती जब सोना है
भरता पेट जन जन का है

करें प्रण बचायें इसे आज
यह है धरती का ताज
यह है गुणों की खान
इसलिए तो है धरती की शान

बचा अगर न पाये इसे
जल्द ही आएगा वो दिन
जब धरा पे हर आदमी
रहने को जमीन न पाएगा

कितनी संपत्ति कितना धन
कुछ न काम आ पायेगा
इसी तरह इंसान अगर
मिट्टी को नष्ट करता जाएगा

आने वाली पीढ़ियों का
अब तो हम रखें ख्याल
मिट्टी है तो हमारा कल है

हिमालय



अडिग हिमालय खड़ा हुआ है
आँधी हो या चाहे तूफान,
सुना रहा नीले अंबर को
भारत की महिमा का गान।

सुनो-सुनो यह बता रहा है
भारत का गौरव-इतिहास,
भारत जिसने दुनिया बदली-
दिया सभी को शुभ्र उजासा।

इसकी गोदी में लहराती
गंगा की पावन जलधार,
सिखलाता है, बढ़ो-बढ़ो तुम
जाओ कभी न हिम्मत हारा।

आओ, भारत की सुंदरता
के गाएँ हम मिलकर गान,
और देश पर रखें सदा ही
उच्च हिमालय-सा अभिमान।

इसके आँचल में लहराती
सप्तराशि की पावन बयार,
कहता है हरपल ये आगे बढ़ो
हो न कभी तुम्हारी हार।

—पुरुषोत्तम राजमणी

मालदा मंडल के अंतर्गत आध्यात्मिक केंद्र महर्षि मेही आश्रम, भागलपुर की उन्नयन्ता

बिहार में भागलपुर का अपना अलग महत्व है। यह अपनी विविधताओं की वजह से प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहा है। वैसे तो इसकी प्राचीन विरासत बहुत कुछ बताने के लिए पर्याप्त है पर हाल के समय में भी इसमें उल्लेखनीय परिवर्तन एवं परिवर्द्धन हुए हैं।

भागलपुर से पूरब में 4 किमी की दूरी पर गंगा नदी के किनारे पर महर्षि मेही आश्रम स्थित है जो पर्यटन एवं अध्यात्मिक उन्नति चाहने वालों दोनों के लिए उपयुक्त है। इस स्थान का नाम कुप्पाघाट है तथा यह भागलपुर में महर्षि मेही आश्रम के रूप में मान्य है। यह एक विशेष धार्मिक स्थल है जहां हर साल हजारों पर्यटक दर्शन करने आते हैं। महर्षि मेही के अनुयायी, हर साल यहां गुरु पूर्णिमा के अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित करते हैं और उत्सव मनाते हैं।



इस स्थान पर अपनी आत्मिक उन्नति के लिए परम हंस महर्षि मेही ने कठोर तप किया। इसके परिणामस्वरूप जब इन्होंने उस अभीष्ट की प्राप्ति हो गई तो इन्होंने अपने ज्ञान से अनेक लोगों को मार्ग दिखाया। ऐसा माना जाता है कि महर्षि मेही एक परमहंस आत्मज्ञानी पुरुष थे तथा इनके संदेश आज भी सभी के लिए उपयोगी हैं। महर्षि के उत्तराधिकारी अनुयायी ने इस आश्रम का निर्माण कराया। गुरु पूर्णिमा के दिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं तथा अपने सदगुरु के प्रति अपनी श्रद्धा को समर्पित करते हैं।

इस आश्रम का परिदृश्य अत्यंत लुभावना तथा मनोहारी है। खासकर शाम के समय यहां उपस्थित होने से मन में नई ऊर्जा का संचार होता है। यहां आने वाले पर्यटक और श्रद्धालु घंटों यहां रहना चाहते हैं। इस आश्रम की विशेषता यह है कि इस स्थल की ऊर्जा मन को तरंगों से भर देती है। इस स्थान पर केवल अपने देश के ही लोग नहीं वरन दुनिया भर से पर्यटक और श्रद्धालु आते रहते हैं।

यह स्थल मुंगेर, पटना, लक्खीसराय सड़क से जुड़ा है। इन स्थानों के लिए नियमित बसें चलती हैं। वैसे तो यह भागलपुर रेलवे स्टेशन से सबसे नजदीक है। भागलपुर का कुप्पाघाट स्वयं में प्रसिद्ध है इसलिए यदि आप भागलपुर जाते हैं तो कुप्पाघाट और मेही आश्रम अवश्य देखिए।

प्रस्तुति—राजभाषा विभाग, मालदा

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय मालदा के निकटवर्ती उपवन में प्रस्फुटित कुसुम दल के कुछ मनमोहक दृष्य

